मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

प्रयाग कुंभ मेले में बहायी गयी भ्रष्टाचार की गंगा! 3
ऑक्सीजन की कमी से मौत के बारे में सरकार ने बोला अमानवीय झूठ - दीपेंद्र हुड्डा 4
उमर खालिद का मुकदमा और दिल्ली पुलिस की तफ्तीश 5
इस्लामोफोबिया से पुलिस को छुटकारा दिलाइये मी लार्ड! 6
कार्पोरेशन 12 करोड़ खर्च करेगी या बरामद 8

वर्ष 35 | अंक 43 | फरीदाबाद | 5-11 सितम्बर 2021 | फोन-8851091460 | ₹3.00

लाठीचार्ज के विरोध में किसानों की गतिविधियां तेज, घरौंडा में महापंचायत

गुरनाम चढ़ुनी बोले- महापंचायत में होगा कड़ा फैसला

करनाल : करनाल के बसताड़ा टोल पर किसानों पर हुये लाठीचार्ज को लेकर भाकियू सोमवार को घरौंडा में महापंचायत करके कुछ बड़ा ऐलान करने वाली है। भाकियू प्रदेशाध्यक्ष गुरनाम सिंह चढ़ुनी ने सरकार पर योजनाबद्ध तरीके से किसानों को लठियाने का आरोप लगाया। सरकार की इस गुण्डागर्दी के खिलाफ किसान संगठन कड़ी जवाबी कार्रवाई करने पर विचार करेंगे। इस बाबत उन्होंने किसानों से राय भी मांगी है। उधर करनाल और कुरूक्षेत्र जिलों में रह रहे उन पुलिस कर्मचारियों के घरों के बाहर रोष प्रदर्शन किया, जिन्होंने इस बर्बर कांड की अगुवाई करी थी। किसानों ने इन पुलिस वालों के परिवारों का सामाजिक बहिष्कार करने का ऐलान भी कर दिया है। सरकार व पुलिस पर किसानों के इस दबाव की राजनीति के चलते अब प्रदेश में तेजी से राजनीतिक हवा शेष पेज दो पर

ज़िला प्रशासन मीडिया को अपना भोंपू बनाना चाहता है

करनाल (म.मो.) लोक सम्पर्क विभाग ने एक प्रेस नोट जारी करके मीडिया से निवेदन किया है कि जो कुछ भी डीसी साहब व एसपी साहब ने रविवार को अपनी प्रेसवार्ता द्वारा बसतारा टोल वारदात बारे बताया था उसी पर विश्वास करें। विदित है कि बसतारा टोल पर बीते शनिवार यानी 28 अगस्त को पुलिस ने जिस बर्बर लाठी चार्ज द्वारा दर्जनों किसानों के सिर फ़ोड़ कर लहुलुहान कर दिया था उसे ये प्रशासनिक अधिकारी हल्का बल प्रयोग बता रहे हैं। अब गोदी मीडिया के सिवाय भला कौन सा जनहितैषी मीडिया इनकी बात को मान लेगा?

प्रेसवार्ता में डीसी निशांत यादव ने जिस गोल-मोल भाषा का इस्तेमाल करते हुये अपने एसडीएम आयुष श्रीवास्तव के शब्दों को अवांछित बताया था उसे उनका माफ़ीनामा न कहा जाय तो क्या कहा जाय? यदि वे इसे अपना माफ़ीनामा नहीं मानते तो ठोक कर क्यों नहीं कहते कि एसडीएम ने जो कुछ कहा था, सही कहा था, उनके आदेशानुसार ही कहा था और आगे भी ऐसे ही शब्दों का प्रयोग करके जनता के सिर फ़ोड़ेंगे।

रही बात किसी विशेष जानकारी के लिये इन अधिकारियों अथवा इनके प्रवक्ता से बात करने की तो सभी जागरूक मीडियाकर्मी भली-भांति जानते व समझते हैं कि झूठे एवं जुमलेबाजों की सरकार के प्रवक्ता कभी भी सच तो बोल ही नहीं सकते। इसलिये पत्रकारों को अपने साधनों एवं श्रोतों द्वारा ही सच्चाई निकाल कर जनता तक पहुंचानी होगी।

कृष्ण-भक्त विकास अरोड़ा बने नये सीपी

आशा है कृष्णपाल की भक्ति तो नहीं हीं करेंगे

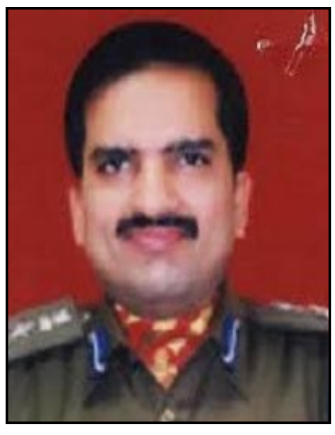

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक दो सितम्बर को हरियाणा सरकार द्वारा जारी आदेश के अनुसार 1998 बैच के आईपीएस अधिकारी फ़रीदाबाद के नये पुलिस आयुक्त तैनात किये गये हैं। फ़िलहाल वे दक्षिण हरियाणा रेंज रेवाड़ी के आईजी पद पर तैनात थे। ये यहां ओम प्रकाश सिंह का स्थान लेंगे जिन्हें एडीजीपी स्टेट क्राइम नियुक्त किया गया है। कायदे से तो विकास अरोड़ा को तीन सितम्बर को ही यहां का चार्ज ले लेना चाहिये था, लेकिन उन्हें ऐसी कोई जल्दी नहीं रहती; वे यहां चार्ज लेने तभी आयेंगे जब ओपी सिंह यहां से अपना 'हिसाब-किताब' समेट लेंगे।

नये सीपी विकास अरोड़ा से शहरवासी उम्मीद करते हैं कि वे बीते डेढ साल के दौरान रसातल में समा चुकी पुलिस की छवि को बेहतर करने का प्रयास करेंगे। उनसे आशा की जाती है कि वे थाने-चौकियों की नीलामी न करके गुणवत्ता के आधार पर तैनातियां करेंगे। नोट छापने के उद्देश्य से जो पुलिसकर्मी शराब व अन्य मादक पदार्थों के धंधे से जुड़े हैं, उनके साथ सख्ती से निपटेंगे। थाने-चौकियों में जनता की लुटाई-पिटाई के बजाय उनकी ठीक से सुनवाई होगी और उन्हें न्याय मिल सकेगा। कहावत है कि जो न्याय चौकी का हवलदार दे सकता है वह न्याय भारत का मुख्य शेष पेज दो पर

मेघालय के गवर्नर सतपाल मलिक की किसान राजनीति

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

मलिक

धनखड़

यह बताने की जरूरत नहीं कि सरकार चाहे कांग्रेस की हो अथवा भाजपा की, तमाम राज्यों की राजधानियों में गवर्नरों की नियुक्ति केन्द्र सरकार अपने वफ़ादार, चापलूस एवं सक्रिय राजनीति में पिट चुके मोहरों की ही करती है। ये लोग राजभवन के राजसी ठाठ-बाठ में रहकर केन्द्र सरकार के एजेंट की भूमिका निभाते हैं। इस भूमिका को निभाते हुए कई गवर्नर तो शर्मिंदगी की तमाम हदें पार कर जाते हैं जैसे कलकत्ता के राजभवन में बैठे जगदीप धनखड़। वैसे तो धनखड़ भी किसान समुदाय से आते हैं लेकिन वे मोदी की चाकरी में इस कदर अंधे हो चुके हैं कि उन्हें मोदी भक्ति के अलावा और कुछ दिखता ही नहीं।

दूसरी ओर इसी समुदाय एवं पश्चिमी यूपी से आने वाले सतपाल मलिक भी हैं जो पूरे ऐशो-आराम से मेघालय के राजभवन में विराजमान हैं, परन्तु उन्होंने अपनी इस नौकरी को दांव पर लगाते हुए खुल कर किसान आन्दोलन का समर्थन किया है। बीते सप्ताह हरियाणा के बस्ताड़ा (करनाल) टोल नाके पर हुए भयंकर लाठी चार्ज के खिलाफ़ खुल कर स्टेंड लिया है। किसानों पर खट्टर की पुलिस द्वारा किये गये इस बर्बर लाठी चार्ज के लिये उन्होंने खट्टर की कड़ी भर्तसना करते हुए उन्हें किसानों से माफ़ी मांगने तथा सम्बन्धित दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने को कहा है। एनडीटीवी द्वारा लिये गये एक साक्षात्कार में जब उनसे गवर्नर जैसे पद पर बैठे होने के बावजूद ऐसे बयान देने पर पूछा गया तो उन्होंने कहा कि गवर्नर तो वे आज हैं कल न भी रहें लेकिन किसान तो रहेंगे ही। इस साक्षात्कार की एक खास बात यह भी है कि इसे केवल एक ही चैनल (एनडीटीवी) द्वारा दिखाया गया है, देश भर के शेष किसी भी चैनल की इतनी हिम्मत नहीं कि वे इसे अपने दर्शकों को दिखा सकते। जाहिर है मोदी की गोदी में बैठे चैनल ऐसी 'गुस्ताखी' कैसे कर सकते हैं? अपने मालिक के विरुद्ध वे भला कैसे भौंक सकते हैं? किसान आन्दोलन के समर्थन में शेष पेज दो पर